International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 03-08-2019; Accepted: 05-09-2019; Published: 16-10-2019
Volume 1; Issue 2; 2019; Page No. 07-09

नारी की नई पहचान तलाशती कथाकृतिः अपरिचिता

दयानिधि सा
सहायक प्राध्यापक व विभाग प्रमुख, महात्मा गांधी स्नातक महाविद्यालय, भुक्ता,जि.–बरगढ़, ओड़िशा, भारत

सारांश
'अपरिचिता' स्त्री विमर्श की मर्म लिपि के रुप में देखा जा सकता है। एक पढ़ी लिखी, होनहार लड़की किस प्रकार एक संकीर्ण मानसिकता से ग्रसित एक युवक के शक की शिकार होती है और उसका जीवन दुखमय हो उठता है, इसका चित्रण पूरी तटस्थता से हुआ है। मल्लिका की शादी मनु भाई नामक युवक से तय हुई थी। दोनों ने एक–दूसरे को अब तक नहीं देखा। शादी तय हो गई थी। मनु भाई केवल दूसरों के मुख से मल्लिका की खूबसूरती के बारे में सुना है। मल्लिका अपने सपनों के राजकुमार के साथ विवाह करने का सपना देखा रही होती है। शादी के लिए एक दिन ही बचा है। कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष के घर में सगुन के सामान भेज दिए गए हैं। मल्लिका शादी के पहला दिन में उपवास कर रही है। घर के सभी लोग इस शादी को लेकर बहुत खुश हैं। पर अचानक वर पक्ष की ओर से सगुन के सामान वापस कर दिए जाने पर मल्लिका के घर में मातम छा जाता है। घर के सभी लोग मन मारे बैठ जाते हैं, मल्लिका की हालत तो रो–रो के और भी खराब हो जाती है। इस बेइज्जती को संभालना उसके लिए बहुत मुश्किल हो जाता है। सुबह होने से पहले ही वह भोर से गांव छोड़ देती है और ट्रेन पकड़कर शहर की ओर रवाना हो जाती है।

मूल शब्दः नारी, पहचान, कथाकृति, अपरिचिता

प्रस्तावना

अपरिचिता' डॉ. प्रतिभा रॉय का एक लघुकाय उपन्यास है। केवल एक सौ चार पृष्ठ के छोटे कलेवर में सृजित यह उपन्यास स्त्री विमर्श की महा गाथा कही जा सकती है। नारी जीवन की संघर्षगाथा इसमें चित्रित है। एक ग्रामीण नारी मल्लिका का जीवन संघर्ष बड़ी मार्मिकता से रुपांकित है। मल्लिका एक ग्रामीण लड़की है, जो अपनी किस्मत की लड़ाई में व्रती है। वह अपना परिचय तलाशती रहती है और समाज में अपरिचिता यानी अपरिचित नारी के रुप में अपने अस्तित्व की तलाश में डूबी रहती है। पुरुष प्रधान समाज में वह महज कठपुतली बन कर रह जाती है और पुरुषों के इशारे से नाचती रहती है। वह कभी शतमन्यु तो कभी सव्यसाची की और खींचती चली जाती है। मल्लिका जिस मानसिक द्वन्द्व से गुजरती है, वह अत्यन्त पीड़ादायक है।

विषय प्रवेश

नारी जीवन क संघर्ष 'अपरिचिता' में चित्रित है। एक ग्रामीण नारी मल्लिका का जीवन संघर्ष बड़ी मार्मिकता से रुपांकित है। मल्लिका की शादी टूटने का कारण है– वह गुमनाम चिट्ठी, जिसे किसी ने शतमन्यु के पास भेज दिया है। उस चिट्ठी में मल्लिका के दुष्चरित्र होने का अफवाह उल्लिखित है। चिट्ठी पढ़कर शतमन्यु बिना सोचे–समझे शादी तोड़ देते हैं। शतमन्यु यहां संकीर्ण मानसिकता से ग्रसित हो जाते हैं और बिना कुछ सुलह जिरह किए सीधा शादी ही तोड़ देते हैं, जिससे मल्लिका और शतमन्यु दोनों का जीवन नस्ट–भ्रस्ट हो जाता है। मल्लिका गांव छोड़ने का निर्णय लेती है और शहर की ओर प्रस्थान करती है। ट्रेन पर सफर करती हुई वह अपने भावी पति शतमन्यु की कल्पना करती हुई मन ही मन सोचने लगती है– ''मनु भाई तुम मेरी कल्पना से भी कितना सुन्दर हो।''01 किन्तु आज मनु भाई उनके जीवन में कल्पना बन कर रह गए हैं। उन्हें अपनी आंखों से देख न सकी मल्लिका। इस जन्म में और सम्भव भी नहीं है। आज मनु भाई यदि फिर से कोशिश करें फिर भी वह उनकी पत्नी बनने से इन्कार कर देगी। मनु भाई ने उनके पवित्र प्रेम को ठुकरा कर उनके चरित्र पर कलंक लगा दिया है। मल्लिका की आशा आकांक्षा की गगन चुम्बी मीनार को तोड़ कर नस्ट भ्रस्ट करके सगुन के सामान उन्होंने वापस कर दिए हैं।''02

मल्लिका की भाभी लता के जरिए ही दोनों एक–दूसरे के करीब आए थे और बिना देखे ही एक–दूसरे से प्यार कर बैठे थे और फिर शादी तय हो गई। अक्सर प्यार आंखों से होकर दिल में उतरता है लेकिन इनका प्यार दिल से होकर आंखों तक पहुंचने वाला था। पर किस्मत में कुछ और लिखा था, इसीलिए उनका मिलन नहीं हो सका। शतमन्यु कॉलेज में जब पढ़ रहे थे, उनकी एक क्लासमेट लड़की से उन्हें प्यार हो गया था, पर एम. ए. करने के बाद तुरन्त बाद उसे एक आई.ए.एस. ऑफिसर मिल गए और उनसे शादी कर ली। शतमन्यु के दिल को बहुत बड़ी ठेस पहुंची इस बेवफाई से। अब वह दूसरी बार एक गुमनाम के चिट्ठी का शिकार हो गए। एक पढ़ा लिखा लड़का एक बेनाम चिट्ठी पर विश्वास करके शादी ही तोड़ देता है, एक होनहार–खूबसूरत लड़की से नाता तोड़ देता है, इससे बढ़कर मनुभाई की मूर्खता का क्या सबूत हो सकता है।

मल्लिका की भाभी के पति यानी लता भाभी के पति राजीव खुद सगुन के सामान लेकर गए थे और परंपरानुसार सारी रस्में संपन्न करके वापस होने ही वाले थे कि शतमन्यु ने शादी से इन्कार करते हुए सगुन के सामान लौटा दिए थे। मल्लिका ट्रेन पर सफर करती हुई कलकत्ता की ओर रवाना होने लगी। रास्ते में उसे रमेश नामक लड़का का कुछ साहचर्य मिला। ट्रेन में ही नाटकीय ढंग से मल्लिका और शतमन्यु की मुलाकात हो जाती है। शतमन्यु मल्लिका से बातचीत करते हुए पढ़ाई में सहयोग करने के लिए अपना पता लिखा कागज का एक टुकड़ा मल्लिका के हाथ में जब थमाता है, उसमें 'शतमन्यु महापात्र' का नाम लिखा हुआ देखकर मल्लिका आश्चर्य चकित हो जाती है। इतने खूबसूरत और सरल स्वभाव वाला लड़का एक गुमनाम चिट्ठी पर इतना विश्वास कैसे कर सकता है, इसी सोच में मल्लिका डूबी रहती है।

शतमन्यु एक ही बर्थ में बैठी मल्लिका से कहता है—''खूबसूरत लड़कियों के प्रति मेरे मन में नफरत है। पर आपको देखने के बाद मेरे अन्दर एक स्वर्गीय पवित्र आनन्द जाग उठा है। आपने मेरे अन्दर की खूबसूरत लड़कियों के प्रति धारणाओं को बदल दिया है।''03 खड़गपुर स्टेशन पर रमेश उतर जाता है। अब मल्लिका और शतमन्यु दोनों अपरिचित रुप से एक—दूसरे के सामने बैठे हुए हैं। मल्लिका अब शतमन्यु के सामने शुभ्रादेवी के रुप में पेश आती है। शतमन्यु के सौम्य—सुन्दर व्यक्तित्व को देखकर शुभ्रा अन्दर ही अन्दर पछताने लगती है। वह मानसिक अन्तर्द्वन्द्व से ग्रसित होकर परेशान हो उठती है। शुभ्रा स्वगतोक्ति करती हुई कहती है—''मनुभाई अभी भी मैं तुमसे प्यार करती हूं। मेरी कल्पना से भी तुम ज्यादा सुन्दर हो। अधिक काम्य पुरुष। तुम्हारी हत्या करके मेरे हृदय की ज्वाला मिट नहीं सकती। मेरे लिए यह असंभव है। तुम हमेशा सुखी जीवन जीओ।''04 मल्लिका उर्फ शुभ्रा के होने वाले पति के लिए शतमन्यु का यह कहना कि क्या आप होती तो उस पुरुष को छोड़ देती ? जिसने आपके साथ धोखा किया है। शुभ्रा अपने उस शतमन्यु को, अपने प्यार को सामने पाकर सजल हो उठती है।

कलकत्ता स्टेशन पर गाड़ी चहुंचते ही शतमन्यु और शुभ्रा दोनों अपने—अपने रास्ते निकल पड़ते हैं। शुभ्रा अपनी सहेली ;तनयाद्ध तनु के पास जाती है। तनु और उसके पति सौमित्र उनकी बड़ी आवाभगत करते हैं और हर संभव मदद का आस्वासन देते हैं। कलकत्ता में शुभ्रा एक नौकरी के लिए इन्टरव्यू तो देती है, लेकिन इन्टरव्यू बोर्ड़ मेम्बरों के गलत व्यवहार से असन्तुष्ट होकर उस नौकरी को ठुकरा देती है। एक प्राइवेट कम्पनी का बॉस शुभ्रा के प्रति गलत नजर डालता है और उसका गलत इस्तमाल करना चाहता है। बॉस की मानसिकता शुभ्रा समझ जाती है और वहां से चलते बनने को तैयार होती है। तभी बॉस उसे अपनी गिरफ्त में लेने के लिए समझता हुआ कहता है—''सोच कर देखिए, आज कल नौकरी कितना मुल्यवान है। नीति आदर्श को पकड़ी हुई आप क्या करेंगी ? आपकी रोजी रोटी उससे चल सकेगी ? देखिए आप एक खूबसूरत युवती हैं फिर बड़ी हठीली मालूम हो रही हैं। किसी भी पुरुष के लिए आप जैसी युवती की कामना होती है। जबकि आप इस उम्र में नौकरी की तलाश में भटक रही हैं। अभी भी आप अविवाहित हैं, आपके आदर्श, आपकी नीति ने आपको अब तक क्या दिया है ?05

शुभ्रा की जिन्दगी में एक 'टर्निंग पॉएन्ट' आता है। एक दिन तनया के घर में सव्यसाची नाम का व्यक्ति अपने बच्चों के साथ घुमने आते हैं। यौवनावस्था में ही सव्यसाची की पत्नी स्वप्ना की मौत हो गई है। स्वप्ना अपने दोनों बच्चों लिपि और मुन्ना को सव्यसाची के पास छोड़कर स्वर्ग सिधार गई है। बच्चों की देख—रेख के लिए सव्यसाची ने एक नौकर रख रखी है, जिसे बच्चे सन्तुष्ट नहीं हैं। शुभ्रा को एक नौकरी की जरुरत है, कि खबर होते ही सव्यसाची अपने बच्चों की देख रेख के लिए हाउस कीपर के तौर पर कुछ दिनों तक नियुक्त करने की बात कहते हैं। शुभ्रा राजी हो जाती है और बच्चों को शुभ्रा के रुप में अपनी खोई हुई मां की ममता मिल जाती है। चन्द दिनों में दोनों बच्चे शुभ्रा से इतने घुल मिल जाते हैं कि उनमें अपनी मां की छवि दिखाई पड़ती है। शुभ्रा को बच्चों को अच्छी तरह से सम्भालता हुआ देख सव्यसाची जब उन्हें साबाशी देते हैं, शुभ्रा मुस्कुराहट भरे स्वर में कहती है—'';केबल छुआ जनम कले नारी मां हुए नाहीं। छुआ संभालिबा तार एक सहजात प्रवृति।द्ध सिर्फ बच्चा पैदा कर देने से कोई मां नहीं बन जाती । बच्चा संभालना भी उसकी जन्मजात प्रवृत्ति है।''06

'अपरिचिता' की शुभ्रा को एक नई दुनिया मिली है, नए सिरे से जिन्दगी जीने का मौका मिला है। वह सव्यसाची के ईमानदार व्यक्तित्व से प्रभावित होती है। सव्यसाची के जीवन में पत्नी वियोग की तकलीफ देख शुभ्रा दुखी हो उठती है। जवानी में ही पत्नी का अचानक इस दुनिया से रुखसत हो जाना सव्यसाची के लिए कम विड़म्बना की बात नहीं है। शुभ्रा पत्नी वियोग का दर्द झेल रहे सव्यसाची को देखकर मन ही मन सोचने लगती है—''लेकिन कभी कभी खुद को बड़ा असहाय समझने लगते हैं। उनका सुदीर्घ जीवन फिर लिपि—मुन्ना की जिम्मेदारी। वह अकेले निभा पाएंगे। नारी पुरुष की कितनी बड़ी मनोबल, हिम्मत है, सव्यसाची अब महसूस कर पा रहे हैं। स्वप्न उनका आत्मबल कमजोर करके हमेशा के लिए चली गई है। वह निहायत कमजोर—असहाय पड़ गए हैं।''07

जिन्दगी के बीच मझधार में स्वप्ना जब सव्यसाची को अकेला छोड़कर चली जाती है, वे बिल्कुल अकेले पड़ जाते हैं। अपनी स्वर्गीय पत्नी की याद में हमेशा खोए रहते हैं। बात—बात में वे भावूक हो उठते हैं और स्वप्ना के गम में डूबे रहते हैं। शुभ्रा देवी हमेशा सव्यसाची को उस गम से बाहर निकालने की कोशिश में जुटी रहती है। उनके दुखमय जीवन में सुख एवं खुशी लाने की कोशिश में ही उनका ध्यान लगा रहता है। सव्यसाची के घर में हाउस कीपर और चाइल्ड केयर टैकर के रुप में काम करते—करते शुभ्रा दोनों बच्चों के इतने करीब आ जाती है कि बच्चे उन्हें अपनी मां के रुप में देखने लगते हैं। शुभ्रा जब उनके घर से जाने की बात करती है, बच्चे जीद पकड़कर बैठ जाते हैं कि किसी भी हालत में उन्हे वहां से जाने नहीं देंगे। लिपि अपने पापा से कहती है कि आन्टी बिल्कुल मम्मा की तरह है, आप उनसे शादी कर लीजिए, हमें मम्मा मिल जाएगी। लिपि शतमन्यु अंकल से भी यही बात करती है कि पापा आन्टी से शादी क्यों नहीं कर लेते। एक दिन शतमन्यु अपने मित्र सव्यसाची के घर घूमने आते हैं शुभ्रा उनके कोमल हृदय और सच्ची इनसानियत की तारीफ करने लगते हैं।

अक्सर देखा जाता है कि गांव देहात में शादी के रिश्ते टूट जाया करते हैं। इसके पीछे गांव के सरफिरे—मनचले लड़कों की ओछी हरकत काम करती है। एक तरफा प्यार और पागलपन की शिकार गांव—देहात की लड़कियां हो रही हैं। सरफिरे लड़के भोली—भाली लड़कियों की जिन्दगियां बर्बाद करने की साजिश रचते हैं। इसी साजिश की शिकार होती है मल्लिका। पड़ोसी गांव का एक मनचला लड़का सुरभाई मल्लिका को अपनी जीवन साथी बनाने के इरादे से एक गुमनाम चिट्ठी शतमन्यु के पास भेज देता है। उस चिट्ठी में मल्लिका दुष्चरित्र होने की झूठी बात उल्लिखित होती है। सव्यसाची के घर अचानक सुर भाई मल्लिका की तलाश करता हुआ पहुंचता है। वह मल्लिका के पैरों तले गिरकर कहता है कि उस गुमनाम चिट्ठी भेजनेवाला और कोई नहीं, बल्कि वह खुद है। आज मल्लिका के सामने माफी मांगता हुआ अपने किए पर पछताता है।

सुर भाई मल्लिका के सामने गिड़गिड़ाता हुआ कहता है—''दोष तुम्हारा नहीं है, दोष मेरा है, मेरी कुत्सित अन्यायपूर्ण आशा की है। मैं जानता हूं, मैं तुम्हारा लायक नहीं हूं। फिर भी तुम्हें पाने की आशा मेरे सर पे इस कदर चढ़ा हुआ था कि मैंने सोचा आखरी वक्त पर तुम्हारी शादी यदि टूट जाती है, तुम्हारे पिताजी मजबूर होकर सगाई हो चुकी बेटी के लिए एक घर जमाई लड़का तलाशेंगे। उस समय मेरा प्रस्ताव रखने के लिए आदमी भी ठीक कर रखा था। मैं खुद वर बनने के लिए तैयार था।''08 सुरभाई के इस पागलपन देखकर मल्लिका हैरान हो रही थी। वह उस लड़के की इस स्वार्थी भावना से अन्दर ही अन्दर कूढ़ती जा रही थी। शुभ्रा यहां सुर भैया की इस नीच हरकत से तंग आ जाती है और हमेशा—हमेशा के लिए उनकी जिन्दगी से दूर चले जाने को कहती है। सुर लज्जित होकर उनसे माफी मंगता हुआ चला जाता है।

शतमन्यु अपने मित्र सव्यसाची के घर आते—जाते शुभ्रा की ओर आकृष्ट होता है। वह शुभ्रा से अनजाने में ही प्रेम कर बैठता है और उसके प्रति हमदर्दी जताने लगता है। शुभ्रा के सामने मल्लिका के गलत चरित्र के बारे में बखान करता हुआ शतमन्यु अपनी सफाई देता है और सारी गलती मल्लिका के सिर मल देता है। शतमन्यु की मानसिकता जानने के लिए शुभ्रा अनजान बनने का अभिनय करती हुई कहती है—''बेचारी मल्लिका ने शादी तय शुदा लड़की के रुप में आपके आघात को सह तो लिया, पर उसी रात को गांव छोड़कर चले आने के सिवाय उसके

पास कोई चारा नहीं था। आपके द्वारा दी हुई चरित्रहीनता की स्टॉम्प लेकर शादी तय शुदा एक ग्रमीण लड़की की क्या दुर्दशा हुई होगी, कहिए तो ? अभी पता नहीं वह किस शहर में कम पगार की कोई नौकरी करके अपना गुजारा कर रही होगी। अभी भी वह आपके प्रेम के लिए मर रही होगी।''09

आज इक्कीसवीं सदी में हम नारी–पुरुष समानता की बात करते हैं। नारी को पुरुष का दर्जा देने की वकालत करते हैं। नारी को देवी की प्रतिमूर्ति, साक्षात लक्ष्मी कहकर उनकी पूजा करने की बात करते हैं। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, तत्र रमन्ते देवता' कहकर नारी पवित्रता की साक्षात तुर्ति कहकर उनका मान–सम्मान करने का राग अलापते रहते हैं। वैचारिक तौर पर हम नारी को गरिमा प्रदान करने का आग्रह करते हैं। पर प्रायोगिक तौर पर ऐसा हो नहीं पाता। नारी को हम वह जगह नहीं दे पाते, जिसकी वकालत करते हैं। नारी और पुरुष में फर्क रह ही जाता है। चाहे जन्म को लेकर हो, चाहे शादी को लेकर हो, चाहे सुरक्षा को लेकर हो, नारी हमेशा उस दर्जे की हकदार नहीं हो पाती, जितना पुरुष हो पाता है। नारी हमेशा पुरुष प्रधान समाज द्वारा तिरस्कृत–अत्याचरित होती है, उससे निजात नहीं पाती। अक्सर नारी पर लोगों की उंगली सहज ही उठ जाया करती है, जबकि पुरुष नारी के चरित्र स्खलन का जिम्मेदार होता है।

वैवाहिक जीवन में पति–पत्नी के अटूट सम्बन्ध पर प्रकाश डालते हुए शुभ्रा सव्यसाची के सामने कहती है– ''सव्यसाची बाबू ! संसार में सभी पति पत्नी के बीच प्रेम नहीं है। फिर भी वे एक–दूसरे के सुख–दुख के साथी बनकर जीवन जी रहे हैं। जीवन बोध को बांट कर चल रहे हैं। उनके बीच बन्धन है। हमारे बीच क्या वह बन्धन नहीं रहेगा। मैं क्या आपके जीवन के सुख दुख को नहीं बांट पाउंगी। क्या आप मेरे पथ प्रदर्शक नहीं बन पाएंगे ? आपका प्यार न मिलने से भी कम से कम थोड़ी शान्ति तो मिल सकेगी, यह मुझे विश्वास है। यह शान्ति दुनिया की कितनी औरतों की किस्मत में जुट पाती है........।''10 नारी केवल अपने पति के साथ थोड़ा सा प्यार, थोड़ा सा विश्वास और थोड़ी शान्ति चाहती है। यही उसका जीवन सम्बल है। वह दूसरों की सेवा में ही अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देती है। वह त्याग एंव बलिदान की प्रतिमूर्ति बनकर पुरुष प्रधान समाज में दूसरों की सेवा में ही अपना पूरा जीवन समर्पित कर देती है।

'पुण्यतोया' की मेघमाला आधुनिक युगबोध से परिपोषित शिक्षित आधुनिक नारी है। वह पढ़ी लिखी है, सही–गलत का फैसला करना जानती है। शिक्षा को नारी के लिए गहना के रुप में स्वीकार करती है। नारी को सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति , घर की लक्ष्मी, पति की सेविका, पति की परछाई या गरीब गाय की दृष्टि से वह नहीं देखती। आधुनिक खयालत के साथ प्रगतिवादी चेतना से ओतप्रेत मेधमाला प्रतिकूल परिस्थिति के सामने हार नहीं मानती , पूरी हिम्मत के साथ आगे बढ़ती है। नारी के प्रति ग्रामीण लोगों की सारी मिथक धारणाओं को तोड़ती हुई वह जीवन पथ पर आगे बढ़ती है, नई राह तलाश करके पुरुष वर्चस्ववादी समाज में नारी का स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करती है। वह साबित करके दिखा देती है कि पुरुष के सामने नारी कठपुतली बनकर नाचने वाली नहीं है।

'अपरिचिता' में शतमन्यु को ग्रामीण परिवेश की सात्विकता एवं पवित्रता पर बड़ा विश्वास था। इसीलिए उसने अपनी दीदी की मध्यस्थता में ही मल्लिका को शादी करने का निर्णय लिया था। पर किसी दुष्ट व्यक्ति की ओछी हरकत की वजह से मल्लिका की जिन्दगी ही तबाह हो जाती है। शतमन्यु यहां शुभ्रा देवी के सामने गांव–देहात के प्रति अपनी धारणा व्यक्त करता हुआ कहता है–''सभी लडकियां तो मल्लिका नहीं हो सकती। सोचा था, गांव की चीजों की तरह गांव की लड़कियां भी असली रही होगीं, पर देखा गांव की चीजों में भी आज कल नकली चीज ज्यादा है।''11

मनु भाई यहां मल्लिका उर्फ शुभ्रा की तरह आकर्षित होते हैं और उन्हें शादी करने की आशा पोषण करने लगते हैं। सव्यसाची उन्हें कहते भी हैं कि शुभ्रा से बढ़कर अच्छी लड़की उसे कहीं नहीं मिलेगी। उन्हीं के शब्दों में–''मनु दूसरे किसी की मध्यस्थता में शादी करने से कई बार हम ठगे जाते हैं। यह तुम्हारी खुद की अनुभूति है। तुम्हारी खुद की बहन की मध्यस्थता में मल्लिका से शादी करने जाकर तुम्हें क्या कम ठेस पहुंची है। आज फिर वही गलती क्यों ? शुभ्रा देवी तो तुम्हारे करीब हैं। उनके प्रेम पात्र बनने की कोशिश करो। मैं हर सम्भव सहायता के लिए तैयार हूं।''12

निष्कर्ष

डॉ. प्रतिभा रॉय ओड़िया उपन्यास साहित्य की एक समर्थ कथाशिल्पी हैं। आपकी कथात्मक कृतियां ओड़िशा प्रदेश के ही नहीं पूरे भारतीय समाज के उस यथार्थ परिदृश्य का सफल चित्रांकन करती हैं जहां नारी दहशत भरी जिन्दगी जीने के लिए मजबूर है। आज की नारी तो आधुनिक जीवन शैली अपनाकर स्वतंत्र रुप से जिन्दगी जीने की चाहत रखती है पर पुरुषवादी मानसिकता से प्रताड़ित होकर घर की चार दीवारी में कैद होकर घुटन भरी जिन्दगी जीती है। मल्लिका समाज में नारी के स्वतंत्र अस्तित्व की लड़ाई में 'प्रो–एक्टिव' यानी सक्रिय हैं। लेखिका ने आज की आधुनिक नारी में एक नई उर्जा भरने का काम किया है, जो अपने हक के लिए कठोर संघर्ष करती है और नारी का वजूद स्थापित करती है। 'वीमेन एम्पावरमेन्ट' यानी नारी सशक्तिकरण अभियान को त्वरित करने में प्रतिभा रॉय का यह उपन्यास 'क्रूसियल रॉल' निभाता है।

कृतज्ञता ज्ञापन

इस शोध पत्र को तैयार करने में हमारे महाविद्यालय के प्राध्यापक श्री अन्तर्यामी साह और श्री अनिल कुमार देवता तथा प्राध्यापिका श्रीमती कल्पना मिश्र का विशेष सहयोग रहा। गुरुदेव डॉ. बिहारीलाल साहू जी की प्रेरणा स्वरुप यह शोध पत्र संपूर्ण हो सका। हमारे महाविद्यालय की लाइब्रेरी से शोध विषयक सारी सामग्री जुटाने में मुझे सोहलत हुई। आप सभी के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–02
2. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–02
3. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–20
4. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–20
5. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–34
6. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–37
7. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–43
8. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–75
9. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–81
10. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–93
11. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–57
12. अपरिचिता – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ–67